प्रश्न 1. समाजशास्त्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए ?

(a) समाजशास्त्र का विषय–क्षेत्र बताईये ?

(b) समाजशास्त्र की प्रकृति स्पष्ट किजिए ?

उत्तर– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और प्रारम्भ से ही वह समाज मे रहता आया है, लेकिन समाज के प्रति उसकी रूचि बहुत बाद में हुई।

सर्वप्रथम वह अपने चारों ओर की घटनाओं का निरिक्षण कर अपने ज्ञान में वृद्वि करता गया । इसी ज्ञान के सहारे उसने कई प्राकृतिक विज्ञानों का विकास किया इसके पश्चात् राजनैतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल जैसे विषयों का विकास किया । समाज विज्ञानों में समाजशास्त्र का विकास बहुत बाद में किया ।

जब से मनुष्य ने समाज के प्रति अपनी रूचि पैदा की तभी से समाजशास्त्र की नीव पडी। समाजशास्त्र का अतीत प्राचीन है, लेकिन इतिहास अभी हाल ही का है। बोलचाल में समाजशास्त्र को समाज का अध्ययन करने वाला शास्त्र या विज्ञान कहा जाता है । समाजशास्त्र शब्द की उत्पति का श्रेय फ्रांसीसी विद्वान आगस्ट कॉन्त का जाता है, जिन्होने सन् 1838 में इस शास्त्र की नीव डाली । इसीलिये इन्हें समाजशास्त्र के पिता कहते है। कॉन्त

समाजशास्त्र (Sociology) शब्द का हिन्दी अनुवाद है। Sociology शब्द दो भाषाओं के मेल से बना है। एक Socius का तात्पर्य समाज तथा logus का अर्थ है शास्त्र या विज्ञान अर्थात् समाजशास्त्र या विज्ञान ।

यह वह शास्त्र है जो समाज का अध्ययन करता है। चुँकि Sociology दो शब्दों के मेल से बना एक अवैध शब्द है , इसीलिये राबर्ट बीयरस्टीड ने इसे अवैध सन्तान कहा है।

J.S.Mill ने इसके स्थान पर इथोलॉजी (Ethology) शब्द से परिचित कराया लेकिन Ethology का तात्पर्य समाज विज्ञान से नहीं है इसलिये इसके स्थान पर Sociology (समाजशास्त्र) शब्द को ही उचित मानकर स्वीकार कर लिया गया ।

समाजशास्त्र की परिभाषा

समाजशास्त्र की परिभाषा अलग–अलग विद्वानों ने अपनी अपनी तरह से प्रस्तुत की है। समाजशास्त्र आगॅस्ट कॉन्त से लेकर वर्तमान समाजशास्त्रीयों तक समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र एवं विषय के निर्धारण में थोड़ा–बहुत हेर–फेर होता रहा है । लेकिन इतना स्पष्ट है कि सभी समाजशास्त्रियों ने समाज का विज्ञान (Science of society) माना है।

Scanned with CamScanner

अब तक जिन जिन विद्वानों ने समाजशास्त्र के अर्थ को अपने अपने शब्दों के जाल में पिराया है उन सभी परिभाषाओं को निम्न चार भागों में बाँटा जा सकता है।

1. समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करने वाले शास्त्र के रूप में
2. समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के अध्ययन करने वाले शास्त्र के रूप में
3. समाजशास्त्र सामाजक समूहों का अध्ययन करने वाले शास्त्र के रूप में
4. समाजशास्त्र सामाजिक अन्तक्रियाओं का अध्ययन करने वाले शास्त्र के रूप में

1. समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करने वाला शास्त्र– इस वर्ग के समाजशास्त्रियों में वार्ड, गिडिंग्स, समनर, आगस्त कॉन्त इत्यादि प्रमुख हैं, जो समाज का अध्ययन करने वाले शास्त्र को समाजशास्त्र कहते हैं। लेकिन समाज क्या है, इसकी कोई अलग से व्याख्या नहीं की।

गिडिंग्स के अनुसार समाजशास्त्र समग्र रूप से समाज का क्रमबद्ध वर्णन है।

वार्ड का कहना है समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है।

2. समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करने वाला शास्त्र हैं– इसमें प्रमुख विचारक मेकाइवर तथा पेज हैं, जिन्होंने अपनी पुस्तक (Society) में कहा है कि समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के विषय में हैं सम्बन्धों के इसी जाल को हम समाज कहते हैं। आपने सामाजिक सम्बन्धों को व भौतिक सम्बन्धों को अलग बताया है। व्यक्तियों के सम्बन्धों में चेतना का अभाव हो तो भौतिक सम्बन्ध बनते हैं।

जबकि जब दो व्यक्ति अपने मस्तिष्क से चेतना स्पष्ट करते हैं तो ये मानसिक सम्बन्ध है और यही सामाजिक सम्बन्ध होते हैं और समाजशास्त्र इन्ही सम्बन्धों का अध्ययन करता है।

3. समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का अध्ययन करने वाला शास्त्र हैं– तीसरा दृष्टिकोण प्रमुख रूप से जॉनसन का है जिन्होंने समाजशास्त्र को सामाजिक समूहों का विज्ञान माना है।

जॉनसन कहते हैं कि समाजशास्त्र परिवार जाति, प्रजाति, सामाजिक वर्गों आदि सामाजिक समूहों की आन्तरिक बनावट इन्हें बनाये रखने वाली या इनमें परिवर्तन लाने वाली प्रक्रियाओं के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों का वैज्ञानिक अध्ययन है।

4. समाजशास्त्र सामाजिक अन्तर्क्रियाओं का अध्ययन करने वाला शास्त्र है– मैक्स वेबर, गिलिन और गिलिन, जार्ज सिम्मेल, मॉरिस गिन्सबर्ग, सोरोकिन इत्यादि ऐसे समाजशास्त्री हैं, जो समाजशास्त्र में अन्तर्क्रियाओं के अध्ययन पर बल देते हैं। मॉरिस जिन्सबर्ग कहते हैं कि

विस्तृत अर्थों में समाजशास्त्र मानवीय अन्तर्क्रियाओं और अन्तःसम्बन्धों उनकी दशाओं एवं परिणामों का अध्ययन है।

सोरोकिन के अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक सांस्कृतिक प्रघटनाओं के सामान्य स्वरूपों, प्रारूपों और उसके प्रकार के अन्तः सम्बन्धों का सामान्य विज्ञान हैं।

उपर्युक्त चारों श्रेणियों से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समाजशास्त्र वह शास्त्र है जो समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन करता हैं। इस इकाई में सामाजिक समूह, सामाजिक सम्बन्ध तथा सामाजिक अन्तर्क्रिया सभी समाये हुये हैं। दूसरे शब्दों में समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों, अन्तर्क्रियाओं, अन्तः सम्बन्धों का एक सामान्य विज्ञान हैं।

(A) समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र

किसी विषय के क्षेत्र से तात्पर्य उस सम्भावित दायरे या सीमाओं से है जहाँ तक कि उस विषय के अध्ययन का विस्तार हो सकता है। इन्कल्स कहते हैं कि समाजशास्त्र परिवर्तनशील समाज का अध्ययन करता है इसलिये समाजशास्त्र के अध्ययन की न तो कोई सीमा निर्धारित की जा सकती है और न ही उसके अध्ययन क्षेत्र को बिल्कुल स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जा सकता है।

किसी भी विषय के क्षेत्र का अर्थ है कि वह विषय कहाँ तक फैला हुआ हैं। प्रत्येक विषय के विकास के साथ–साथ उस विषय के विद्वान विषय का क्षेत्र निर्धारित करना चाहते हैं जिससे आगे चलकर इस विषय का अध्ययन करने वालों को असुविधा न हों। समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र को लेकर विद्वानों में दो मत हैं, ये हैं–

(1) स्वरूपतामक सम्प्रदाय (Formal or Specialistic School)
(2) समन्वयात्मक सम्प्रदाय (Synthetic School)

स्वरूपतामक सम्प्रदाय या विशिष्टवादी सम्प्रदाय–
(Formal or Specialistic School)

इस सम्प्रदाय के प्रमुख अगवा जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल को माना जाता है। सिमेल के अलावा इस सम्प्रदाय के अन्य विद्वान वीरकांत मैक्सवेबर वानविज तथा टॉनीज आदि प्रमुख है। इस विचारधारा को मानने वाले समाजशास्त्र के लिये एक निश्चित विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र प्रतिपादित करते है। इन विचारों का मत है कि यदि समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र को निश्चित व विशिष्ट नहीं किया जाता है तो इसका स्वरूप अत्याधिक अनिश्चित हो जाएगा और समाज के अध्ययन के रूप में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, राजनैतिक शास्त्र तथा इतिहास आदि समाज विज्ञानों में भटकता रहेगा। उस स्थिति में समाजशास्त्र का न तो कोई पृथक अस्तित्व होगा और न ही कोई विशेष महत्व ही । इसलिये समाजशास्त्र को कुछ विशिष्ट बनाना होगा। इसके लिये समाजशास्त्र कुछ विशिष्ट सामाजिक

Scanned with CamScanner

सम्बन्धों का ही अध्ययन करे न की प्रत्येक अंग का । सामाजिक सम्बन्धों के विशिष्ट स्वरूपों का अध्ययन करने पर बल देने के कारण इस सम्प्रदाय को स्वरूपात्मक सम्प्रदाय का है । इस सम्प्रदाय के विचारों के प्रमुख विचार इस प्रकार है।

1. जार्ज सिमेल के विचार – (Views of George Simmel)

जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र व विशिष्ट विज्ञान बनाना चाहते थे । सिमेल का कहना था कि किसी भी वस्तु का अध्ययन दो तरह से किया जा सकता है।

(1) उसके स्वरूप का अध्ययन, व

(2) उसकी अर्न्तवस्तु का अध्ययन ।

स्वरूप का तात्पर्य वस्तु के बाहरी आकार से है जबकि अर्न्तवस्तु का तात्पर्य वस्तु की आन्तरिक रचना से है ।इनका कहना है कि स्वरूप व अर्न्तवस्तु दोनों एक दूसरे से पृथक है और इनका अलग अलग अस्तित्व है। जैसे एक ही आकार स्वरूप की गिलासें – प्लास्टिक, पीतल, चॉदी, सोने, लोहे या कॉच की ले सकते है। इनमें अलग अलग पदार्थ जैसे– मिट्टी, पानी, तेल, शराब, गेंहुँ, दाल भर दे तो यह पदार्थ अर्न्तवस्तु कहलायेगा । इन पदार्थो को गिलास में डालने पर भी गिलास का स्वरूप नहीं बदलेगा । इसका तात्पर्य यह है कि स्वरूप व अर्न्तवस्तु दोनों एक नहीं बल्कि अलग अलग है और एक दूसरें को प्रभावित भी नहीं करते । ठीक इसी प्रकार सिमेल कहते है कि सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन भी दो प्रकार से हो सकता है। और सिमेल समाजशास्त्र में सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप का अध्ययन करने को महत्व देते है। उदाहरण के लिये प्रतिस्पर्द्धा, प्रभुत्व, श्रम विभाजन आदि सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप है जबकि सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्र जैसे– आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि सामाजिक सम्बन्धों की अर्न्तवस्तु को स्पष्ट करती है जो उपर्युक्त सामाजिक सम्बन्धों में विधमान है। समाजशास्त्र इस अर्न्तवस्तु का अध्ययन न करके सिर्फ सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप का अध्ययन करेगा ।

2. वीरकांत के विचार–(Views of Vierkant)

वीरकांत के विचार जार्ज सिमेल की तरह के है जो समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान बनाना चाहते है। वीरकांत ने समाजशास्त्र को सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपो का अध्ययन कहा है। वीरकांत के अनुसार मानव के साथ जोड़ने में मानव को समूह के साथ बांधनें में प्रेम, घृणा, सर्म्पण, सम्मान, संघर्ष तथा आधिपत्य आदि कुछ मानसिक सम्बन्ध होते है। यदि समाजशास्त्र को अनिश्चितता से छुटकारा दिलाना हो तो उसे अपने को इनी मानसिक तत्वों के स्वरूपों का अध्ययन करने तक सीमित करना होगा। ये तत्व ही सामाजिक सम्बन्धों के निर्माण में मौलिक कहे जा सकते है। इस आधार पर वीरकांत का मानना है समाजशास्त्र को एक विशेष सीमा में ही अपना

अध्ययन करना होगा ओर यह सीमा सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप की सीमा ही है जिसका अध्ययन इस विज्ञान में किया जाना चाहियें ।

3. मैक्स वेबर के विचार (Views of Max Weber)–

मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र को सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान कहा है सभी क्रियाये सामाजिक नहीं है । कोई भी क्रिया वहीं तक सामाजिक कही जा सकती है जहाँ तक कि वह दूसरे अथवा दूसरों के व्यवहारों के सन्दर्भ में की गई है और दूसरे के व्यवहार से प्रभावित होती है जैसे– दो साईकिल सवारों का आपस में टकराना सामाजिक क्रिया नहीं है बल्कि टकरानें के पश्चात् आपस में एक दूसरे को गाली गलौच करना सामाजिक क्रिया है। वेबर कहते है कि अगर समाजशास्त्र में सभी प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है तो समाजशास्त्र का क्षेत्र अस्पष्ट व असीमित हो जाता । इसीलिये इसमें सामाजिक क्रिया का ही अध्ययन किया जाना चाहिए ।

जार्ज सिमेल, वीरकांत तथा मैक्स वेबर के अलावा जर्मन समाजशास्त्री टॉनीज ने समाजशास्त्र को एक विशेष विज्ञान में स्पष्ट करने का प्रयास किया है इनका मानना है कि समाजशास्त्र (Pure Sociology) तभी रह पायेगा जबकि उसमें अन्य सामाजिक विज्ञानों की विषय वस्तु का मिश्रण नहीं होने दें और इसके नियम अन्य विज्ञानों के नियमों से पूर्णतया पृथक् रखें ।

आलोचना (Criticism)–

उपर्युक्त विचारकों के विचारों से आज अधिकांश लोग सहमत नहीं है हालांकि स्वरूपात्मक् सम्प्रदाय के मानने वालों ने अपने विचार काफी तार्किक व व्यवस्थित ढ़ंग से प्रस्तुत किये फिर भी इन पर अनिश्चिता व अस्पष्टता का आरोप है। इस सम्प्रदाय के विरोध में जो तर्क दिये गये है, वे हैं।

1. इस सम्प्रदाय के विद्वानों का यह मानना है कि अन्य सामाजिक विज्ञान सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन नहीं करते है वे सामाजिक सम्बन्धों की अर्न्तवस्तु का अध्ययन करते है ठीक नहीं है क्योंकि कई ऐसे सामाजिक विज्ञान हैं जो सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों का ही अध्ययन करते हैं। जैसे विधिशास्त्र जो कि एक सामाजिक विज्ञान हैं इसमें भी सत्ता, दासता, स्वामित्व, प्रभुत्व, आज्ञा–पालन,संघर्ष आदि का अध्ययन बहुत ही व्यवस्थित रूप से किया जाता है। अतः समाजशास्त्र को इस आधार पर एक स्वतंत्र विज्ञान का दर्जा देने की बात सही नहीं है।सोरोकिन का कहना है कि स्वरूपों का अध्ययन अन्य विद्वानों द्वारा भी किया जाता है। अतः समाजशास्त्र के लिये मानवीय सम्बन्धों के स्वरूपों के विज्ञान के रूप में कोई स्थान नहीं है।

Scanned with CamScanner

2. समाजशास्त्र को एक पृथक् व स्वतंत्र विज्ञान बनाने वाले स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के विद्वानों ने इसका अध्ययन क्षेत्र इतना सीमित बना दिया कि समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध ही नहीं रह जाता। जबकि गणित को छोड़कर शायद ही ऐसा कोई विज्ञान होगा जो एक दूसरे की सहायता नहीं लेता। सोरोकिन कहते है कि शायद ही ऐसा कोई विज्ञान हो जो अन्य विज्ञानों से किसी न किसी रूप में सम्बन्ध न रखता हो।

3. स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के प्रमुख अगुवा जार्ज सिमेल ने स्वरूप व अर्न्तवस्तु को एक दूसरे के पृथक माना है। यह पृथक अस्तित्व सम्बन्ध मान्यता भौतिक वस्तुओं के बारे में सही हो सकती है, परन्तु सामाजिक सम्बन्धों पर लागू नहीं होती। सोरोकिन ने लिखा है हम एक गिलास को शराब, जल या शक्कर से बिना उसके स्वरूप को परिवर्तित किए हुए भर सकते है परन्तु मैं एक सामाजिक संस्था के विषय में कल्पना भी नहीं कर सकता कि उसका स्वरूप उसके सदस्यों के बदल जाने के बाद भी परिवर्तित नहीं होगा। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक सम्बन्धों के क्षेत्र में स्वरूप व अर्न्तवस्तु एक दूसरें से जुड़े हुए है पृथक नहीं है।

इसलिये यह कहना गलत है कि समाजशास्त्र में सिर्फ सम्बन्धों के स्वरूप का ही अध्ययन किया जाना चाहिए अन्तर्वस्तु का नहीं ।

2. समन्वयात्मक सम्प्रदाय (Synthetic School)

समन्वयात्मक सम्प्रदाय से सम्बन्धित विद्वानों मे सोरोकिन, दुर्खीम, हॉबहाउस तथा गिन्सबर्ग आदि प्रमुख है । ये समाजशास्त्र को एक विशिष्ट या विशुद्ध विज्ञान बनाने के स्थान पर एक सामान्य विज्ञान बनाने के पक्षधर हैं । इनका यह मानना है कि समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र को विशिष्ट व सीमित कर दिया जाए तो इसका अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा । इसलिए आवश्यकता यह नही है कि समाजशास्त्र को विशुद्ध व विशिष्ट विज्ञान बनाया जाये बल्कि आवश्यकता उसे सामान्य विज्ञान बनाने की है । समाजशास्त्र में सिर्फ सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों का ही अध्ययन करके उस की अन्तर्वस्तु का भी अध्ययन करना होगा क्योंकि अन्तर्वस्तु व स्वरूप एक दूसरे से पृथक नहीं है । जैसे कि एक मानव शरीर जो अलग–अलग अंगो से मिलकर बनता है । इन सभी अंगो में से किसी एक अंग में अगर परिवर्तन होता है तो उसका प्रभाव दूसरे अंग पर भी पड़ता है । ठीक उसी प्रकार समाज भी कोई अखण्ड व्यवस्था नहीं है उसके भी अलग–अलग अंग है । इन सभी अंगों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध होता है । जिसको समझना अत्यन्त आवश्यक है । यह तभी सम्भव है जबकि समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान बनाया जाए और साथ में इसके क्षेत्र को व्यापक बनाया जाये ।

समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान बनाना इसलिए भी आवश्यक है कि अन्य सभी सामाजिक विज्ञान, जैसे–राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र आदि किसी एक पक्ष का ही अध्ययन करते हैं । ऐसा कोई भी

सामाजिक विज्ञान नहीं है जो कि समाज के सभी पक्षों का एक साथ अध्ययन करता हो इसलिए समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान बनाना होगा । इस सम्प्रदाय के प्रमुख विचारकों के विचार निम्न है :–

1. दुर्खीम के विचार (Views of Durkhim)– फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम समन्वयात्मक विचारधारा के समर्थक हैं । दुर्खीम समाजशास्त्र को सामूहिक प्रतिनिधानों का विज्ञान कहते है । इनका कहना है कि प्रत्येक समाज की अपनी कुछ प्रथाएं व परम्पराएं होती है । इन्ही परम्पराओं व प्रथाओं के आधार पर कुछ सामूहिक विचारधाराएं विकसित हो जाती हैं । इसी के अनुसार समाज के सभी सदस्य व्यवहार करने लग जाते हैं । इस तरह समाज की सामूहिक भावनाएं एक सामूहिक शक्ति का रूप ले लेती है जिसे दूर्खीम सामूहिक प्रतिनिधान (Collective Representation) कहते हैं । यही शक्ति सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसको समझ कर ही समाज को ठीक से समझा जा सकता है । इसलिये समाजशास्त्र को सामूहिक प्रतिनिधानों का अध्ययन करना चाहियें ।

2. हॉबहाउस के विचार (Views of Hobhouse)– समन्वयात्मक सम्प्रदाय के समर्थक हॉबहाउस कहते है कि समाजशास्त्र का प्रमुख कार्य अन्य सभी सामाजिक विज्ञानों के प्रमुख सिद्धान्त एवं परिणामों के बीच मौलिक तत्वों का पता लगाना तथा उनका सामान्यीकरण करना हैं । इस तरह समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान के रूप में स्थापित करना जिससे उसका अन्य सामाजिक विज्ञानों के बीच समन्वय हो पाये ।

3. सोरोकिन के विचार (Views of Sorokin)– सोरोकिन भी समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान बनाना चाहते हैं । इनका कहना है कि सभी सामाजिक विज्ञान एक दूसरे से स्वतंत्र न होकर एक दूसरे पर निर्भर हैं । इसका कारण यह है कि सभी विज्ञान समाज के एक पहलू या एक विशिष्ट घटना का ही अध्ययन करते हैं जबकि सभी घटनाएं पारस्परिक रूप से एक दूसरे को प्रभावित ही नहीं करती है बल्कि एक दूसरे पर आधारित भी होती हैं । अतः इसका अध्ययन करने के लिए एक पृथक् सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता हैं । इसलिए समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान के रूप में विकसित करना होगा । सोरोकिन अपनी बात को निम्न प्रकार से समझाने का प्रयत्न करते है ।

आर्थिक (सम्बन्ध)	a b c	d e f
राजनैतिक (सम्बन्ध)	a b c	g h i
धार्मिक (सम्बन्ध)	a b c	j k l
वैधानिक (सम्बन्ध)	a b c	m n o

उपर्युक्त व्याख्या से यह स्पष्ट है कि सभी प्रकार की घटनाओं में घटनाऐं a,b,c सामान्य रूप से पाई जाती हैं । चूँकि सोरोकिन समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान बनाने के पक्षधर हैं इसलिए वे कहते हैं कि समाजशास्त्र

Scanned with CamScanner

आर्थिक, धार्मिक या राजनैतिक इत्यादि घटनाओं का अलग या विशिष्ट रूप से अध्ययन नहीं करता बल्कि इन सभी में पाये जाने वाले सामान्य तत्वों का अध्ययन व विश्लेषण करता हैं । सोरोकिन कहते हैं कि सामाजिक जीवन के प्रत्येक पक्ष का अध्ययन समाजशास्त्र में किया जाना चाहिये । इस प्रकार समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र सामान्य होना चाहिए ।

आलोचना (Criticism)–

समन्वयात्मक सम्प्रदाय के समर्थकों ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं उसके विरूद्ध कुछ आरोप लगाते हैं, वे हैं–

1. यदि समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप और अन्तर्वस्तु दोनों का अध्ययन करेगा तो यह खिचड़ी बन कर रह जाएगा ।

2. यदि समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान बनाया गया तो इसका अपना कोई पृथक अस्तित्व ही नहीं रह जाएगा तथा इसे अन्य सामाजिक विज्ञानों पर निर्भर रहना पड़ेगा ।

3. यदि समाजशास्त्र को अन्य विज्ञानों पर निर्भर रहना पड़ेगा तो इसकी अपनी कोई निश्चित पद्धतियाँ विकसित नहीं हो पायेगी ।

उपर्युक्त दोनों सम्प्रदायों के मानने वालों के तर्क जानने के बाद यह कहना गलत ही होगा कि समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है या एक सामान्य विज्ञान है बल्कि समाजशास्त्र एक विशिष्ट और एक सामान्य विज्ञान दोनों ही हैं । इसे गिन्सबर्ग ने स्पष्ट करते हुए लिखा है कि उदाहरण के रूप में यह सभी जानते है कि प्राणिशास्त्र एक अर्थ में अनेक विज्ञानों का संकलन है जिसमें प्रत्येक विज्ञान स्पष्टतः एक विशिष्ट विज्ञान है परन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि इन विशिष्ट विज्ञानों के अतिरिक्त एक सामान्य प्राणिशास्त्र भी होता है जो जीवन की सामान्य दशाओं का एक उन्नत ज्ञान भण्डार हैं । इसी प्रकार समाजशास्त्र में भी सामाजिक जीवन के विभिन्न भागों से सम्बन्धित अनेक विशिष्ट विज्ञान है और इस रूप में समाजशास्त्र समस्त सामाजिक विज्ञान के एक समग्र समूहों के समान हैं । एक अन्य अर्थ में वह (समाजशास्त्र) स्वयं ही एक विशिष्ट विज्ञान है जिसका उद्देश्य अन्य विज्ञानों के बीच पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्धों को खोजना और सामाजिक सम्बन्धों की सामान्य विशेषताओं का विवरण देना है ।

इसका आशय यह है कि समाजशास्त्र एक तरफ परिवार, जाति, प्रजाति आदि कुछ विशिष्ट पक्ष का अध्ययन करता है तथा दूसरी तरफ अन्य सामान्य क्षेत्रों से सम्बन्धित अनुसंधान भी करता है ।

(b) समाजशास्त्र की प्रकृति (Nature of Samajshastra)

जब कभी भी समाजशास्त्र के बारे में चर्चा की जाती है तो यह प्रश्न उठाया जाता है कि क्या समाजशास्त्र विज्ञान है ? आज भी समाजशास्त्रियों के मतों में वह भिन्नता देखने को मिलती है कि समाजशास्त्र विज्ञान है या नहीं । हॉलाकि समाजशास्त्र के जनक आगस्त कॉन्त ने

समाजशास्त्र को एक विज्ञान की संज्ञा दी । जब समाजशास्त्र में यह प्रश्न उठा कि समाजशास्त्र विज्ञान है या नहीं तो हमें सर्वप्रथम यह भी जान लेना होगा कि विज्ञान कहते किसे है ।

विज्ञान शब्द को लेकर अधिकांश लोगों के मस्तिष्क में एक गलत धारणा आज भी विद्यमान है। ये विज्ञान का सम्बन्ध उस विषय की विषय वस्तु से लगाते है जो प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन करती हैं जैसे भौतिक शास्त्र,रसायन शास्त्र,जीव शास्त्र,वनस्पति शास्त्र, आदि तथा जो विषय प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन नहीं करते उसे विज्ञान की श्रेणी में नहीं रखते । यह धारणा एक दम गलत व सत्यता से परे है अर्थात् सही नहीं है। जैसा कि स्टुआर्ड चेज ने लिखा हैं विज्ञान का सम्बन्ध पद्धति से है न कि केवल उसकी विषय वस्तु से ।

कभी–कभी विज्ञान शब्द को लेकर एक गलती और करते हैं कि विज्ञान शब्द का उपयोग टेक्नोलोजी या उसके उपकरणों के लिये प्रयोग करते हैं । इस अर्थ में पंखे, रेडियो, रॉकेट, हवाई जहाज आदि को चलाने के लिये या उसे ठीक करने की तकनीक को या उसके ज्ञान को विज्ञान कह देते है । हकीकत ये है कि ये सभी चीजें विज्ञान की उपलब्धियाँ है न कि विज्ञान ।

चर्चमेन व एकोफ कहते है कि विज्ञान ज्ञान प्राप्त करने का तरीका है । आपके अनुसार विज्ञान का अर्थ कुशल खोज है ।

उपर्युक्त व्याख्या से यह कहा जा सकता है कि ज्ञान की किसी भी शाखा को विज्ञान की श्रेणी में रखा जाय या नहीं इसका निर्धारण करने के लिये उस विषय की विषयवस्तु पर नहीं वरन् उसकी अध्ययन पद्धति पर गौर करना होगा ।

क्या समाजशास्त्र एक विज्ञान है–

विज्ञान का तात्पर्य क्रमबद्ध और व्यवस्थित अध्ययन से हैं । इसके लिये वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है चाहे वह विषय प्राकृतिक विज्ञान का हो या सामाजिक विज्ञान का । समाजशास्त्र को विज्ञान की श्रेणी में रखने के प्रमुख आधार निम्न हैं ।

1. समाजशास्त्रीय ज्ञान का आधार वैज्ञानिक पद्धति– जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञानों में तथ्यों का संकलन करने निष्कर्ष निकालने के लिये वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है, । उसी प्रकार समाजशास्त्र से वैज्ञानिक पद्धति की विशेषताओं, सत्यापनशीलता, वस्तुनिष्ठता,निश्चयात्मक,सामान्यता तथा पूर्वानुमान की क्षमता का उल्लेख किया गया है उन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखकर अध्ययन किया जा सकता है ।

2. अवलोकन से तथ्यों का संकलन–समजशास्त्र में अध्ययन करने वाला व्यक्ति प्रत्यक्ष अवलोकन कर आवश्यक तथ्यों का संकलन कर

Scanned with CamScanner

सकता है । विज्ञान में काल्पनिक या दार्शनिक विचारों का कोई महत्व नहीं होता । इसलिये समाजशास्त्र में काल्पनिक या दार्शनिक विचारों के स्थान पर अनुसंधानकर्त्ता घटना स्थल पर स्वयं जाकर निरीक्षण कर उपयोगी तथ्यों का संकलन करता है ।

3. तथ्यों का वर्गीकरण व विश्लेषण– प्राकृतिक विज्ञानों में तथ्यों को संकलित करके उसका वर्गीकरण व विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकालता है । समाजशास्त्र में भी अनुसंधानकर्त्ता तथ्यों का संकलन करके समानता व भिन्नता के आधार पर वर्गीकरण करके तालिकाओं का निर्माण करके निष्कर्ष निकलता है ।

4. समाजशास्त्रीय नियम सार्वभौमिक है – जिस तरह विज्ञान के नियम सार्वभौमिक होते हैं उसी प्रकार समाजशास्त्रीय नियम भी सार्वभौमिक होते हैं । इसका अर्थ यह है कि अगर परिस्थितियाँ समान रहें तो सामाजिक नियम भी विभिन्न समाजों और कालों में सही उतरते जैसे– गन्दी बस्तियाँ अपराध को जन्म देती हैं, यह सिद्धान्त सार्वभौमिक रूप से ठीक पाया जाता हैं ।

5. समाजशास्त्रीय नियमों की पुनर्परीक्षा सम्भव है– प्राकृतिक विज्ञान में सिद्धान्तों की परीक्षा व पुनर्परीक्षा सम्भव हैं वैसे ही समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों की परीक्षा व पुनर्परीक्षा भी सम्भव है। भैतिक विज्ञान में एक सामान्य नियम यह है कि पानी सौ डिग्री तापमान पर भाप में बदल जाता हैं इसकी जाँच सम्भव हैं क्योंकि यह वैज्ञानिक पद्धति द्वारा अध्ययन पर आधारित है। वैसे ही समाजशास्त्र का एक नियम यह है कि विघटित परिवार बाल–अपराध को जन्म देता हैं इस नियम या सिद्धान्त की भी पुनर्परीक्षा की जा सकती है।

6. समाजशास्त्र कार्यकारण सम्बन्ध पर आश्रित है–समाजशास्त्र में सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करते समय क्या हैं का वर्णन करके ही अध्ययनकर्त्ता अपनी जिज्ञासा सन्तुष्ट नहीं कर लेता बल्कि वह यह जानने का प्रयास करता है कि इन घटनाओं के पीछे किन कारणों का हाथ है कोई भी घटना जब घटित होती है तो उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है, इसका पता लगाना समाजशास्त्री का प्रमुख कार्य है ।

7. समाजशास्त्र भविष्यवाणी करता है– समाजशास्त्र को इस कारण भी विज्ञान की श्रेणी में रखा जाता हैं क्योकि यह क्या है के आधार पर क्या होगा की बात भी बताता हैं अर्थात समाजशास्त्र भविष्यवाणी करने की क्षमता रखता है। समाजशास्त्र में जो भी भविष्यवाणी की जाती हैं, वह समाजशास्त्री अपनी मर्जी या इच्छा से नहीं करता बल्कि वर्तमान परिवर्तनों के आधार पर सामाजिक व्यवस्था क्या रूप लेगी, बताने का काम करता हैं।

उपर्युक्त की विवेचना में यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र एक विज्ञान है और इसकी प्रकृति वैज्ञानिक है ।

समाजशास्त्र को विज्ञान कहने में कुछ आपत्तियाँ–

समाजशास्त्र एक विज्ञान है इस बात को कुछ विद्वान स्वीकार नहीं करतें । इन विद्वानों का यह कहना है कि समाजशास्त्र पूर्ण यथार्थ विज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र की अपनी कुछ सीमाएँ हैं । इन विद्वानों ने समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के मार्ग में आने वाली कुछ बाधाओं की चर्चा की है । जिन आपत्तियों की उन्होंने चर्चा की है –

1. सामाजिक घटनाओं की जटिलता– जिन विद्वानों ने समाजशास्त्र को विज्ञान मानने से इन्कार किया उन्होंने इसके विरूद्ध जो सबसे पहली आपत्ति उठायी वह है कि समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करता हैं ये सामाजिक घटनाएँ काफी जटिल हैं। सामाजिक घटनाओं की जटिलता के बारे में लुण्डबर्ग कहते हैं कि "मानव समूह व्यवहार से सम्बन्धित एक वास्तविक विज्ञान होने के लिये सम्भवतः एक सबसे बड़ी बाधा इसकी अध्ययन वस्तु की जटिलता है।" इसका कारण यह है कि सामाजिक घटनाएँ अनेक परस्पर सम्बन्धित कारकों से प्रभावित होती है जिससे उन सभी कारकों को या उसके अंश का पता लगाना या उसको समझना बहुत ही कठिन हैं । इसी जटिलता के कारण ही कुछ विद्वान समाजशास्त्र को विज्ञान नहीं मानते हैं।

मूल्यांकन– जो विद्वान समाजशास्त्र को विज्ञान मानते हैं उनका यह कहना कि जटिलता का यह आरोप निराधार हैं। वे लिखते हैं कि कोई भी विषय या घटना अपने आप में जटिल नहीं होती है। जटिलता एक सापेक्ष अवधारणा है और इसका सीधा सम्बन्ध हमारी ना जानकारी से है । कोई भी विषय वस्तु जिसके बारे में यदि हमें जानकारी नहीं हैं, तो वह हमारे लिए जटिल हैं और अगर हमें उसकी पर्याप्त जानकारी है तो वह वस्तु हमारे लिये सरल हो जायेगी। इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक घटनाएँ जटिल नहीं वरन् उन घटनाओं के बारे में हमारी अज्ञानता ही उसे जटिल बना रही है । इसीलिये ये कहना कि सामाजिक घटनाएँ जटिल हैं, एकदम गलत प्रतीत होती है ।

2. वस्तुनिष्ठता का अभाव– समाजशास्त्र को विज्ञान नहीं मानने वाले एक दूसरा आरोप यह लगाते हैं कि समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठता का अभाव है । इसका कारण यह है कि प्राकृतिक विज्ञानों में अनुसंधानकर्त्ता अध्ययन करते समय वस्तुनिष्ठता रखता है जबकि समाजशास्त्र में अध्ययन कर्त्ता परिवार,विवाह, जाति, धर्म आदि का अध्ययन करते समय वस्तुनिष्ठता के स्थान पर व्यक्तिनिष्ठ हो जाता है क्योंकि प्राणीशास्त्र में अध्ययन कर्त्ता को मेंढक, मछली, खरगोश से कोई प्रेम या द्वेष नहीं होता हैं जबकि समाजशास्त्र में मनुष्य को मनुष्य का अध्ययन करना होता हैं । इसलिये मानव का मानव से प्रेम या द्वेष का होना स्वाभाविक है । इसलिये सामाजिक अध्ययनों में

Scanned with CamScanner

वस्तुनिष्ठता (तटस्थता या वैषयिकता) नहीं रख पाता । इसलिये समाजशास्त्र विज्ञान नहीं है ।

मूल्यांकन– यह आरोप भी सत्यता से परे हैं । इसका कारण यह है कि आज समाजशास्त्र में अनेक पद्धतियों का प्रयोग करके व्यक्ति निष्ठता को दूर करना काफी सीमा तक संभव हो सका हैं । यह भी कहां जा सकता है कि अगर अध्ययन करने वाला व्यक्ति विषय का जानकार हो, ईमानदार हो तथा होशियार व चतुर हो तो यह बिल्कुल सम्भव हैं वह तथ्यों को अलग–अलग रख सकता है ।

3. सामाजिक घटनाओं की गुणात्मकता– जिन विद्वानों ने समाजशास्त्र को विज्ञान मानने से इन्कार किया उन्होंने एक ओर आपत्ति यह उठाई कि समाजशास्त्र में जो तथ्य संकलित किये जाते हैं उनका माप लेना संभव नहीं हैं । जबकि प्राकृतिक विज्ञानों में जो तथा प्राप्त किये जाते हैं वे प्रायः परिमाणात्मक होते हैं । इसका अर्थ है कि प्राकृतिक विज्ञान इतना विकरित हो गया कि अपनी हर विषय वस्तु को गणनात्मक रूप में प्ररतुत कर सकता हैं जैसे लम्बाई चौड़ाई नापने के लिये इंच,से.मी., गज इत्यादि का प्रयोग करता हैं तरल प्रदार्थ का माप लीटर,गैलन, से लेना सम्भव है । इस तरह से सामाजिक घटनाओं का नाप लेना संभव नहीं है इसलिये समाजशास्त्र विज्ञान नहीं है ।

मूल्यांकन– उपर्युक्त आपत्ति इस आधार पर सही नहीं है कि विज्ञान के लिए माप का होना सदैव अनिवार्य हो व उसके सभी तथ्य परिमाणात्मक ही हो। यह बात पहले तक तो ठीक थी कि समाजशास्त्र में गुणात्मक तथ्य ही प्राप्त किये जाते थे, लेकिन आज समाजशास्त्र व उसकी प्रविधियाँ इतनी विकसित हो चुकी है कि प्राप्त तथ्यों को गुणात्मक होते है, को गणनात्मक या परिमाणात्मक में परिवर्तित किया जा सकता है ।

4. समाजशास्त्र में प्रयोगशाला का अभाव है– समाजशास्त्र को विज्ञान नहीं मानने वाले एक आरोप यह लगाते हैं कि इसके पास प्राकृतिक विज्ञानों की तरह अपनी कोई प्रयोगशाला नहीं हैं जिसमें विषय का नियन्त्रित दशाओं में अध्ययन किया जा सके । सामाजिक सम्बन्ध ऐसे नहीं है कि उसे तराजू में तौला जा सकते या टेस्ट ट्यूब में लेकर परिक्षण किया जा सके । इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किसी निश्चित एवं नियंत्रित प्रयोगशाला में सम्भव नहीं है । इसलिये ये कहा जाता है कि जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे सभी अनुमानों पर आधारित होते हैं और इसकी कारण समाजशास्त्र को विज्ञान मानने की आपत्ति उठाई है ।

मूल्यांकन–यह बात सही है कि जिस प्रकार की प्रयोगशालाएँ प्राकृतिक विज्ञानों के पास है वैसी प्रयोगशाला समाजशास्त्र के पास नहीं है लेकिन इसका यह तात्पर्य तो नहीं है कि बिना प्रयोगशाला के किसी विषय का वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सके। अगर विज्ञान के लिए प्रयोगशाला

इतनी ही आवश्यक होती हो शायद न्यूटन, गैलिलियों, आर्कमिडिज, जैम्सवाट द्वारा प्रतिपादित नियम सभी विज्ञान की विषय वस्तु नहीं बनते क्योंकि इन्होंने किसी भी प्रयोग शाला में जाकर अध्ययन नहीं किया । इसलिये सिर्फ इस आधार पर समाजशास्त्र के पास एक खुली समाज रूपी प्रयोगशाला हैं जहाँ जिस तरफ का अध्ययन करना हो किया जा सकता है ।

5. सामाजिक घटनाओं की गतिशील प्रकृति– समाजशास्त्र को विज्ञान नहीं मानने वाले एक आरोप यह भी लगाते हैं कि सामाजिक घटनाओं की प्रकृति गतिशील है । इनका तात्पर्य यह है कि सामाजिक घटनाऐं समय–समय पर परिवर्तित होती रहती हैं और जो परिवर्तिन होते है वे व्यवस्थित व नियमित क्रम में नहीं होते जबकि प्राकृतिक घटनायें बदलती तो अवश्य है परनतु उनमें एक निश्चित क्रम रहता हैं । जबकि सामाजिक घटनाओं में तीव्र परिवर्तन व नियम विरूद्ध परिवर्तन के कारण ही इसे विज्ञान नहीं माना जा सकता है ।

मूल्यांकन– यह बात सही है कि प्राकृतिक घटनायें भी बदलती है जिस तरह से सामाजिक घटनायें बदलती हैं परन्तु यह कहना गलत है कि परिवर्तन तीव्र होता हैं और उनमें कोई नियम नहीं है । जबकि सामाजिक घटनाओं की गतिशील प्रकृति के बावजूद भी उसका अध्यन व्यवस्थित तरीके से करना संभव हैं । क्योंकि इसमें परिवर्तन की दर इतनी कम है कि आज अनुसंधान करके जो नियम बनाये जाते हैं वे कल के लिये भी सही होंगे । उदाहरण के तौर पर हम हमारे समाज की विभिन्न संस्थाओं व परम्पराओं को ले तो यह बात स्वयं स्पष्ट हो जाएगी। दूसरी बात यह कि सामाजिक घटनाऐं जब बदलती है तो ये परिवर्तन एक व्यवस्थित व नियम के तहत होता है । इस कारण इसे समझना कोई कठिन कार्य नहीं है ।

6. भविष्यवाणी की सीमित क्षमता– विज्ञान की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें भविष्यवाणी की क्षमता हाती हैं समाजशास्त्र को विज्ञान नहीं मानने वाले एक आपत्ति यह उठाते हैं कि समाजशास्त्र में भविष्यवाणी करने की क्षमता नहीं है और यदि कभी भविष्यवाणी की जाती है तो गलत साबित भी होती है । इसलिये समाजशास्त्र विज्ञान नहीं है ।

मूल्यांकन– यह आरोप भी निराधार है क्योंकि समाजशास्त्र में आज अध्ययन के लिये नई–नई प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है जिससे सही निष्कर्ष प्राप्त हो रहे हैं इन्ही निष्कर्षो के आधार पर पूर्वानुमान किया जाता है जो आगे चलकर सही साबित भी होता हैं । ये हो सकता हैं कि कई बार यह भविष्यवाणियाँ गलत भी हो जाती है । ऐसी भविष्यवाणियाँ तो कई बार मौसम विभाग, जो कि विशुद्ध विज्ञान है, की भी गलत हो जाती है फिर भी उसे तो विज्ञान कहा जाता हैं । जबकि समाजशास्त्र की एक दो भविष्यवाणियाँ गलत हो जाये तो उसे विज्ञान नहीं मानना पूर्वाग्रह हैं ।

Scanned with CamScanner

वास्तविकता यह है कि भविष्यवाणी की क्षमता विषय वस्तु पर निर्भर नहीं करती बल्कि अध्ययन पद्धति की विकसित अवस्था पर निर्भर करती है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि समाजशास्त्र को विज्ञान नहीं मानने वालों ने जो आपत्तियाँ उठाई हैं वे सब निराधार है। उसका तात्पर्य यह है कि समाजशास्त्र एक विज्ञान है और उसकी प्राकृतिक वैज्ञानिक है परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ज्ञान कीइस शाखा (समाजशास्त्र) में व्यवस्थित पद्धति (वैज्ञानिक पद्धति) का उतना प्रभावकारी प्रयोग नहीं हो पाता जितना की प्राकृतिक विज्ञानों में हो पाता हैं । इस दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं ।

स्टीवर्ट व ग्लिन कहते हैं कि विज्ञान के लिये जिन विशेषताओं का होना आवश्यक है वे सभी समाजशास्त्र में हैं । इसलिये इसे विज्ञान कहा जा सकता है । यह विज्ञान सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करता हैं इसलिये इसे सामाजिक विज्ञान कह सकते है ।

Scanned with CamScanner